



195
Vasbomica
p. 12

१ मूर्द्ध्यामगथादग्या मयाकचचुर्दगी। नउकुगुगार्तपूर्व चउर्दल्युछि चान ली ॥

१ युर्द्ध्यामगथादगीमाली याममकचउर्दगी। उथाद्यासाययत्तन गिर्द्धचनमवुवीत ॥
१ निवनाशिवाचामकनकाव छथरुद्रु निवनाशिवातमान चउर्दगीसयानलयाय ॥

१ नमस्तस्मैवनाहाय लीलयाहुमगमलीम्।

१ मन्त्रश्चनश्चनयत्त ॥

आश्विन कथि
1.832 I

ASIAN ARCHIVES

195
Vasudhara
p. 12



मत्त॥

१कागवून अंगुष्ठपुमायाद
 दवडाय थदवमृगसृष्टि
 वाकलनयादवतं नलसः
 यीत थकलनन कागवूस
 रुलयादतं लीखत इद्वीदि
 थन दवनसनीवत थक

वाङ्मननयूवभास्यत्रानयजमान॥



दथकाथसथयन
 यतिवाय॥

तं कयादवन कागवदवत
 वीदिनठायक कलन दथस॥
 १यूवादिनवोदिन॥ कउगुवि॥
 सानवा॥ काम॥ मीका॥ अक
 त॥ मास॥ साग॥ थतमृग
 स्रवतयायवियादि॥

सुखदामनः मन्त्रो

१ यासादं ग किमावृत्त मनुस्वन विरुषितं । खलुं नु विन्दु संयुक्तं अग
स्यमनुमूद्वयु ॥ वागुर्वचन विन्दु ३ मायाग कि कया लिका । लाया
मूदामहावीना वामकगिवदंगिका ॥ १००० ॥ १००० ॥ अगस्ययामनु ॥
१ अगस्यवगया डयवासविधि ॥ निम्नानुगुकरक ॥ धनसन्निनिना
हान ॥ धनसन्निगुकरक ॥ सिकानिद्ध धकूदूवगदभइना ॥ ॥
१ मनीषायविद्वदु अगस्य यधीमहि । नन्नमृषिं पुथादयान ॥ ॥

ॐ नमो गच्छाय ॥ अगच्छाय विप्रसिद्धाय ॥ नमिष्ये ॥ धूनिष्ये ॥ यतनत
य स्वातन्त्र्ये ॥ स्वातन्त्र्ये स्वतन्त्रे ॥ ॐ अद्यादि ॥ यत्तुमानां अगच्छाय
त निमित्तार्थं दृष्टवानस्म्यस्यार्थानिम ॥ ॐ माहात्म्यं कान्तमस्मान् ऊना
नीज्ञानवन्निहि ॥ दृष्टमूढनेर्लथन तं नो मिहितवरास्करं ॥ पृथ्वतम ॥
स्वानराणि धिष्यंत ॥ ॐ सिद्धिं मुक्तिं चार्जयति ॥ यत्तुमा नाना अगः
स्यवगनिमित्तार्थं पृथ्वराजनीसमर्थयामि ॥ वाक्प्रेषण ॥ गुणनमस्कानं ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ ॐ य य ४ पृथिवी ॥ ॐ विश्वा नमा ॥ ॐ अग्निर्देवता ॥ ॐ ओ ४ मक्ति
 ४ ॥ ॐ शुभं च ॥ ॐ मना इति ॥ यु तिष्ठ ॥ व दार्चन वि ॥ अग्निर्गर्भ ॥ ॐ
 ॥ ॥ तत्ता वृत्तमात्रात् ॥ स्वान्नुत्तमं तत्ता आसनयाय ॥ कृत्वा तन्नुत्तमे
 वाय ॥ कृत्वा तत्ता मत्तमं ॥ वत्ता मत्तमं कृत्वा तन्नुत्तमे ॥ द्वा द्वा यत्ता मत्तमं
 दि ॥ ॥ तत्ता वृत्तमात्रात् ॥ स्वान्नुत्तमं तत्ता आसनयाय ॥ कृत्वा तन्नुत्तमे
 सत्ता स्वति ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ
 कस्तुतया पितृभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ

गुल्लं वत्ता मत्तमं निदाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ
 ॥ अद्वा यत्ता मत्तमं निदाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ
 आकाशाय नमः ॥ ॐ वायवे नमः ॥ ॐ मातृभ्यो नमः ॥ ॐ नदिभ्यो नमः ॥ ॐ महा
 कालाय नमः ॥ ॐ गणाय नमः ॥ ॐ गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ द्वा द्वा यत्ता मत्तमं
 गुलाय नमः ॥ ॐ वत्ता मत्तमं निदाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ
 ये ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ

२॥ॐ अनेध्वर्याय २॥ॐ अधर्माय २॥ॐ अज्ञानाय २॥ॐ अवैराग्या
य २॥ॐ अनेध्वर्याय २॥ॐ आध्वनगकय २॥ॐ अतनासनाय २॥ॐ
कन्याय २॥ॐ नालाय २॥ॐ यद्राय २॥ॐ यगाय २॥ॐ कंगनाय २॥
ॐ कर्णिकोय २॥ॐ अगस्त्याय २॥ॐ लायामूदाये २॥ॐ कागयूषास
नाय २॥ॐ ईरासनाय २॥ ॥ आवाहनमनु ४॥ॐ अगस्त्यमूर्तिगद्
त्रगजावागमदामून। आसनचमयादहं गृहाणमूर्तिर्युगव॥ अ

गच्छ २॥ ॥ खानवतअन्तगतवालावच्छात॥ ध्यान॥ॐ शुद्धसुः
टिकसंकाशं दक्षिणदिशिर्मूर्तिं। चतुर्भुजं मङ्गातउ४ कमण्डलूद
लुधत्रिणी॥ अरयमन्दमालानि तिनर्गध्यानयूयिणी। गयस्त्रानमका
नडा वनमालाविरुविर्ग॥ कानूष्यविषनाभय कलभयत्रिय
भगनी। एवंधावातगादवसर्वयाययनागनी॥ ध्यानयूयन्नमः ॥
॥ ॥ थथेयठयावथवर्गद्वयसकलस्य॥ ॥ शुभलिमनु ४॥ॐ का

नयूष्ययतीकाग। अग्निमानूतसरिव। मिणवन्नाया४युग क्रीरथातनमासुत
 ॥ अगस्त्यायगुया३३लियूच्यनम॥३॥ ॥ स्नानं ॥ यावनसर्वतीर्थतर्पणं
 गदिसकसागने४। स्नानयकलियर्गथन सलिले४स्नाययाम्यहं ॥ अगः
 स्थायस्नानार्घ्यं२॥ ॥ वसु ॥ कीमकय्यासिर्जवसुं स्वर्णवयूषीवनं
 । गृध्रागिरगन्नाथ। याहिमींद्र४खसकटात ॥ ॥ चन्दनं ॥ चन्दनंच
 त्र्यधवलं चतुर्कानिसुगीतलं। लयनं सर्वेभूतयू गृहाणमस्तुः

व२

समुद्रा ॥ ॥ सुगन्धचन्दनं ॥ कथूनालिविचिगाणि सुगन्धयविमला
 निच। विलयनं सूत्रप्रसू गृहाणमृनिर्धूगव ॥ ॥ सिद्धं ॥ वीनरुसम
 समुत्पन्नं त्रियुक्कंदकृतीमदगु। मृद्विसिद्धिवर्नयाता संयद्रिश्य
 रुकाम्राया ॥ ॥ किराऊऊमका ॥ नागीवृयमिदं यूप्यं नवगत्वात्म
 कीयनं। गभयगीमनुसंधूगं गृध्रागामयवीतकं ॥ ॥ अर्द्धं ॥ गधुलं
 प्रष्टिऊनकं आयूनात्राग्यवर्द्धनं। सर्वद्विगिरुलदिहि गृहाणमद

तमूलमं ॥ ॥ मालस्वान ॥ यथामालाविचित्राणि ग्रन्थिगानि कृता
निच। गृहाणमूनियुं (गण) दहिमचमनात्रथं ॥ ॥ तास्वान ॥ आगीक
नृष्टिकाजीती सवगीवदमालिका। कन्दमध्वनिकायुक्तं यथसकन
मासुत ॥ ॥ **शायुक्तसव** ॥ ॥ (मे) हितं यथकृष्णार्णुं सर्वव्याधिवि
नाशनं। सर्वसुत्रविनाशाय गृह्यताञ्जमुषीध्वन ॥ ॥ **जीविस्वान** ॥
आगीयुष्यसूगन्धश्च सर्वेषांमादिर्गृह्यतां। मूनीध्वनगृहा (गद) य

व्याणमूलमालमं ॥ ॥ **दियासकु** **दिया** **जुद्ध** **गदिया** **द्वारुल**
॥ **त्रा** **अयु** **गिन** **मसु** **सुय** **मृषियु** **गिव** **नान** **न**। लायामुद्राजगन्माणा
सतीर्नायवनासती ॥ **य** (थ) **क** **रुल** **कामार्थ** **युष्य** **दृष्ट** **द्वि** **गानि** **च**
। गृहाणमूनियुं (गण) लायामुद्रायनं नमः ॥ ॥ **यद्री** ॥ **यद्व** **युष्य** **म** **ना** **रु** **च** **सर्व** **ेषां** **धी** **य** **दा** **य** **की** **रु** **द** **च** **गृ** **ह्य** **तां** **स्वामिन्** **य** (थ) **क** **रुल** **काम्या** ॥ ॥ **उरुल** ॥ **युष्य** **नीला** **त्यल** **चैव** **सर्व** **ेषां** **मति**

दुर्लभं । सुखसोराग्रदंदि गृह्णतां च मृषीध्वज ॥ ॥ ध्वज ॥ राज
युगिनमसुख्य मृषियुगिचवानन । लाया मूढायति ४ प्रीमान् आसो
तस्मेनमानम ४ ॥ ॥ काशव ॥ काशयुष्ययुगीकाश अग्निमानुगसंरुवामि
गाववृणथा ४ युग वृंरथाननमा मुत ॥ ॥ तुलसी ॥ तुलसीयावन
युष्य कशवानामतिप्रियं । गृह्णतां मुनिनाऊग नमस्तस्मेनमानम
४ ॥ ॥ तग ४ यूजन ॥ ॐ द्वागयुगमय २ ॥ ॐ तुगायुगमय २ ॥ ॐ द्वायनयु

गमयनम ४ ॥ ॐ कलियुगमय २ ॥ ॐ मृगवदाय २ ॥ ॐ यद्वद्वदाय
२ ॥ ॐ सामव दाय २ ॥ ॐ अथर्ववदाय २ ॥ ॐ अगस्याय २ ॥ ॐ कृष्ण
गुप्तनाय २ ॥ ॐ कल (म) द्वाय २ ॥ ॐ वृंरथानय २ ॥ ॐ अगस्यामूर्त
य २ ॥ ॐ अगस्यामृषियुगवाय २ ॥ ॐ मिगाववृणय २ ॥ ॐ राजयुगी २
॥ ॐ लायामूढाय २ ॥ ॐ मृषीध्वनाय नम ४ ॥ ॐ निम (ध्व) ॥ तद्वा अस
कयतुपूर्वादि ॥ ॐ गतमाय २ ॥ ॐ रनद्वाकाय २ ॥ ॐ विश्वामिगाय

२॥ॐ उमदमय २॥ॐ काश्याय २॥ॐ वनिष्ठाय २॥ॐ अग्नय २॥ॐ द
वाय २॥ ॥ गदा ॥ॐ आदित्याय २॥ॐ सामाय २॥ॐ अंगनाय २॥ॐ
वृक्षाय २॥ॐ वृहस्पतये २॥ॐ पुत्राय २॥ॐ गनेश्वराय २॥ॐ गुरु
व २॥ॐ कंगव २॥ॐ उन्नमन २॥ ॐ तिग्रहा ४॥ ॥ॐ अश्विन्यै २॥ॐ र
वत्यै २॥ॐ कृत्तिकायै २॥ॐ आदित्यै २॥ॐ मृगशिरायै २॥ॐ आ
दायै २॥ॐ पुनर्वसु २॥ॐ वृश्चायै २॥ॐ अश्लेषायै २॥ॐ मघाये

२॥ॐ पूर्वफाल्गुण्यै २॥ॐ उत्तरफाल्गुण्यै २॥ॐ रुद्रायै २॥ॐ विनायै २॥
ॐ स्वात्यै २॥ॐ विशाखायै २॥ॐ अनुवाधायै २॥ॐ अश्लेषायै २॥ॐ मूलायै
२॥ॐ पूर्वाषाढायै २॥ॐ उत्तराषाढायै २॥ॐ अश्लेषायै २॥ॐ प्रवणायै २॥
ॐ धनिष्ठायै २॥ॐ शतवृषायै २॥ॐ पूर्वश्रवणायै २॥ॐ उत्तरश्रवणायै २॥
ॐ प्रवणायै २॥ ॐ निनन्द ॥ ॥ॐ भव्याय २॥ॐ वृषाय २॥ॐ मिथुनाय
२॥ॐ कर्कटाय २॥ॐ सिंहाय २॥ॐ कन्यायै २॥ॐ तुलायै २॥ॐ विष्णवे

२॥**ॐ** धनय २॥**ॐ** मकराय २॥**ॐ** वृत्ताय २॥**ॐ** मीनाय २॥**ॐ** तिना
गय ४॥ ॥**ॐ** विष्कंसाय २॥**ॐ** युतिय २॥**ॐ** आयुष्यत २॥**ॐ** सीताय २॥**ॐ** अतिगंभ्य २॥**ॐ** पुमानाय २॥**ॐ** धृतय २॥
ॐ मूलाय २॥**ॐ** गंभ्य २॥**ॐ** वृद्धय २॥**ॐ** धृवाय २॥**ॐ** व्याघाताय २॥
ॐ रुष्यय २॥**ॐ** वक्राय २॥**ॐ** पुद्गय २॥**ॐ** वृत्तिपाताय २॥**ॐ** वलि
यानाय २॥**ॐ** यत्रिघाय २॥**ॐ** निवाय २॥**ॐ** सिद्धय २॥**ॐ** साक्षाय २॥

ॐ पुत्राय २॥**ॐ** पुत्राय २॥**ॐ** वक्रय २॥**ॐ** वृद्धाय २॥**ॐ** वृद्धय २॥
ॐ तिनाग ४॥ ॥**ॐ** वक्राय २॥**ॐ** माद्वय २॥**ॐ** कोमाय २॥
ॐ वृद्धय २॥**ॐ** वक्राय २॥**ॐ** वृद्धाय २॥**ॐ** वामुत्तय २॥**ॐ** म
हालक्ष्म २॥**ॐ** तिमातका ४॥ ॥**ॐ** अश्वत्थाम २॥**ॐ** वलय २॥
ॐ वामाय २॥**ॐ** रुद्रमत्त २॥**ॐ** विरीषय २॥**ॐ** कृपाय २॥
ॐ यत्रपुत्रामाय २॥**ॐ** मार्क २॥**ॐ** यत्रपुत्रामाय २॥**ॐ** यत्रपुत्रामाय २॥

४॥ ॥ आधमचक्रुष्का॥ ॐ नंदगयालाय २॥ ॐ गदायनय २
॥ ॐ स्कन्दाय २॥ ॐ यागिनी २॥ ॥ वासुदेवाय ॥ ॐ रुद्राय २॥ ॐ
अग्नय २॥ ॐ यमाय २॥ ॐ नैर्मृषाय २॥ ॐ ववृषाय २॥ ॐ वा
यव २॥ ॐ कुवनाय २॥ ॐ वीरभनाय २॥ ॐ अधम २॥ ॐ दुर्वा
य २॥ ॐ निदमलाकयाला ४॥ ॥ ॐ अनन्ताय २॥ ॐ वासुकिना
मय २॥ ॐ गदाकाय २॥ ॐ कर्काटकाय २॥ ॐ यद्राय २॥ ॐ मरु

यद्राय २॥ ॐ शिखायालाय २॥ ॐ कलिकाय २॥ ॐ रुद्रनाम ४॥ ॥ ॐ धूम्र
मृदुस्थ २॥ ॐ यद्विगममृदुस्थ २॥ ॐ यद्विमममृदुस्थ २॥ ॐ उरुनसम
स्था २॥ ॐ मानसनावस्थ २॥ ॐ सयसमस्थ २॥ ॐ निममृदु ४॥ ॥
ॐ मयव २॥ ॐ मलुलाय २॥ ॐ कलासाय २॥ ॐ मलयाय २॥ ॐ गन्ध
मायनाय २॥ ॐ मरुद्राय २॥ ॐ धीयवृगाय २॥ ॐ रुमकूटाय २॥ ॐ
मेनाकपवृगाय २॥ ॐ यवृगस्थ २॥ ॐ नियवृगा ४॥ ॥ ॐ नलाय २॥

ॐ निगलाय २ ॥ ॐ मृगलाय २ ॥ ॐ विगलाय २ ॥ ॐ गलागलाय २ ॥ ॐ
नसागलाय २ ॥ ॐ योगालाय २ ॥ ॐ तिसयूयामाला ४ ॥ ॥ ॐ दीवादा
र्णवाय २ ॥ ॐ दध्वादार्णवाय २ ॥ ॐ ॐ दूदार्णवाय २ ॥ ॐ लवण
दार्णवाय २ ॥ ॐ कालादार्णवाय २ ॥ ॐ मदिनादार्णवाय २ ॥ ॐ यसा
दार्णवाय २ ॥ ॐ सकसमदुध्या २ ॥ ॥ ॐ उर्वदीयाय २ ॥ ॐ कृगदी
याय २ ॥ ॐ मकदीयाय २ ॥ ॐ काशुदीयाय २ ॥ ॐ मल्लदीयाय

२ ॥ ॐ ममधदीयाय २ ॥ ॐ यक्षलदीयाय २ ॥ ॐ सकदीयया २ ॥ ॐ
तिसयूदीया ४ ॥ ॥ ॐ रुक्मिकाय २ ॥ ॐ रुक्मलाकाय २ ॥ ॐ स्वर्णाकाः
य २ ॥ ॐ मरुलाकाय २ ॥ ॐ ऊनलाकाय २ ॥ ॐ तथालाकाय २ ॥ ॐ म
ह्यलाकाय २ ॥ ॐ तिसयूलाका ४ ॥ ॥ ॐ कालाय २ ॥ ॐ सुद्विस्त्रिय
ककाय २ ॥ ॐ सर्वदेवगाय २ ॥ ॐ अगस्त्यमूर्तिय २ ॥ ॐ हृदयाय २ ॥
ॐ गिरस २ ॥ ॐ गिराय २ ॥ ॐ कवचाय २ ॥ ॐ नगाय २ ॥ ॐ अम्राय

२॥ आवाहनस्तु यनचन्दनाद्गतयूष्यनमः॥ ॥ गतः कलगाय
॥ ॐ वृद्धः ॥ ॐ विष्णुः ॥ ॐ सदाशिवाय ॥ ॐ गंगाय ॥ ॐ
यमुनाय ॥ ॐ सतस्य ॥ ॐ गङ्गाय ॥ ॐ कोनिके ॥ ॐ वाग्वि
॥ ॐ चन्द्रागमये ॥ ॐ मार्कण्डेयाय ॥ ॐ काश्याय ॥ ॐ वलि
॥ ॐ व्यासाय ॥ ॐ गणतमाय ॥ ॐ रत्नदात्राय ॥ ॐ यम
दग्नये ॥ ॐ आदित्यादिनवग्रहस्था ॥ ॐ अश्वत्थामा इष्टविर्न

जीविस्था ॥ ॐ संपूर्णकलगाय ॥ आवाहनादि ॥ त्वयूडाताम
कास्वानक्याय ॥ ॐ हृदयाय नमः ॥ ॐ आदिनायूडन ॥ ॥ गताव
लिपूना ॥ ॐ स्वस्त्या नन्दुयालाय ॥ ॐ ननसिद्धमहाशेनवाय
॥ ॐ कुलाहकमहाशेनवाय ॥ ॐ नयालवकुलादुष्टे ॥ ॐ
ययागमादध्वनीदुष्टे ॥ ॐ लंकार्यानादसीदुष्टे ॥ ॐ असिता
दुष्टेनवाय ॥ ॐ नूनुरेनवाय ॥ ॐ चणुरेनवाय ॥ ॐ काधुरे

नवाय २॥ **ॐ** उन्मरु नवाय २॥ **ॐ** कनाली नवाय २॥ **ॐ** गीय १
 नवाय २॥ **ॐ** सहा नवाय २॥ **ॐ** वक्राद्यादिमा १८ ग १८ स्था २
 ॥ **ॐ** सर्व ४ ८ गुया ल २॥ आवा रुनादि ॥ हा क उ उ म का खान
 ॥ **ॐ** हृदयादि पूजन ॥ **ॐ** निवलि पूजा ॥ ॥ नमो गाय निवृजन ॥ **ॐ**
 गाय नय २॥ **ॐ** विष्णु नवाय २॥ **ॐ** रु नवाय २॥ **ॐ** लं वा द नवाय
 २॥ **ॐ** एक द काय २॥ **ॐ** रु न स नाय २॥ **ॐ** गं म स नाय २॥ **ॐ** रु मि म

२ की मानी पूजा ॥ वक्राय १२ ॥
 खाय २॥ **ॐ** गाय निमूर्ति २॥ आवा रुनादि ॥ आ क उ उ म का खान
 न ॥ **ॐ** हृदयादि पूजन ॥ **ॐ** नि गाय निवृजा ॥ ॥ नमो गाय निवृ
 जन ॥ **ॐ** न न्दाथे २॥ **ॐ** रु दाथे २॥ **ॐ** सु रु दाथे २॥ **ॐ** सु शा लाथे २॥ **ॐ** सु
 मन स २॥ **ॐ** गाय नय इ ग्नेथे २॥ **ॐ** विष्णु व सदा नि वाय २॥ **ॐ** क
 यिलादि य १८ ग म मा २॥ आवा रुनादि ॥ लय पू उ उ म का खान
 ॥ **ॐ** हृदयादि ॥ **ॐ** नि गाय निवृजा ॥ ॥ नमो द्वा र्थि खा पूजन ॥ **ॐ** व

रिद्धिनाम्नादिस्मृतद्वयकूलद्वयगाथा २॥ ॐ ॐ हृदयगाथे २॥
ॐ कूलद्वयगाथा ४॥ ॐ समलपयत्रिवात्रथा २॥ आवाहनादि ॥ एयू
उत्तमकास्वान ॥ ॐ हृदयादि ॥ ॐ निद्रिखाचिखापूजा ॥ ॥ धनम
(धूपूजनं) ॥ ॐ अगस्त्याय २॥ ॐ गमन्याय २॥ ॐ सनातनाय २॥ ॐ
विष्णवे २॥ ॐ यमाय २॥ ॐ अग्नित्रय २॥ ॐ दक्षाय २॥ ॐ सन्मर्त्याय २
ॐ भक्त्याय २॥ ॐ यवागवाय २॥ ॐ आयसीराय २॥ ॐ उष्ण २॥

ॐ व्यासाय २॥ ॐ काल्यायनाय २॥ ॐ वृहस्पतये २॥ ॐ गङ्गाय २॥ ॐ
लिखिताय २॥ ॐ हानीताय २॥ ॐ अग्नये २॥ ॐ याज्ञवल्काय २॥ ॐ मा
र्कण्डेय २॥ ॐ वैश्वदेवाय २॥ ॐ भालुल्याय २॥ ॐ कोत्साय २॥ ॐ मे
नकाय २॥ ॐ विप्रवस २॥ ॐ कलाय २॥ ॐ वाधाय २॥ ॐ वात्स्याय २
॥ ॐ विविल्याय २॥ ॐ सालिकालाय २॥ ॐ माण्डुकाय २॥ ॐ साकल्या
य २॥ ॐ सर्वस्य सृष्टिस्था २॥ ॥ ॐ मिश्रवृक्षाय २॥ ॐ गयस्मानाय

२॥ॐ अस्मन्वागाय २॥ॐ विषदहनाय २॥ॐ काशप्रथयिष्याय
२॥ॐ गङ्गाप्रविश्या २॥ॐ वीर्यवृधाय २॥ॐ लायामुद्राय २॥ॐ द
क्षिणादिस्तुतिस्तु २॥ॐ नत्नमस्तुलाय २॥ॐ अगस्त्यमूर्त्यनम
४॥ ॥ॐ पुनियथ २॥ॐ द्वितीयाय २॥ॐ तृतीयाय २॥ॐ चतुर्थी
२॥ॐ पंचमी २॥ॐ षष्ठी २॥ॐ सप्तमी २॥ॐ अष्टमी २॥ॐ नवमी
२॥ॐ दशमी २॥ॐ एकादशी २॥ॐ द्वादशी २॥ॐ त्रयोदशी २॥

ॐ चतुर्दशी २॥ॐ अमावास्या २॥ॐ पूर्णमासी २॥ॐ निमित्थय ४॥
॥ॐ यज्ञयागुपस्था २॥ॐ स्वर्गाय २॥ॐ मरुताय २॥ॐ यागाला २
॥आवाहनादि॥ ॥ॐ धियाधुनि॥ धूयाश्च सर्वदेवाना माहात्रागंध
निर्हर्तुं । गृध्राणां सर्वरावेन प्रीयतां क्रीरसं राव ॥ ॥ घृणकाशवृ
त्तिकादीयः॥ काशवृत्तिरवदीयं घृणपूर्वसमहूलं । चक्रुषा
वाचनादव गृध्राणियायुर्गामम ॥ ॥ धनमाहनीरुच ॥ ॥ हूलं

यत्तस्मिन्कदलीरुलं नाश्रुद्धंदातिमिगथा। वीउयूनकखरुनी गृध्रगामि
कुलीरुलं ॥ रुलं विविधसंसारं मूनीनामनमूरुमं। गुनूलाथगृहाल
दं सुखादंशत्रुदुर्वं ॥ **यज्ञानं** ॥ लघुकालपुत्रानिर्धं रुल्लिकामुकि
कारुथा। गं कर्नावलिकानीष्टं यज्ञानं प्रणिगृह्यतां ॥ अयूया ४८॥ गना
दृष्टा द्युतयज्ञानसाविता ४। गृध्रगदीयमीनाथ यत्र गेदचमसुः
खं ॥ **लोषधी** ॥ उं मनीचं यिगुलीजीनी सूक्ष्मलाचलवद्वर्क। जागीरु
लं रुविडाच लोषधीयनिगृह्यतां ॥ **वाहि** ॥ यवाकगानिमायालिः

कालमाषकतावर्क। धान्ययुष्यतिलं चैव वाहिसयूनमासुत ॥ ॥
वीरुय ४ सयकलाकारां यागवाषकनाळं म। गृध्रगदीयमीमिष्टं
दमात्रागुं जगदुता ॥ **नेवडी** ॥ सिद्धान्तं विविधं राष्ट्रं यागदंयूः
सिवर्द्धनं। दृढयानन्दकारित्वं मन्नाययनिगृह्यतां ॥ **गाल** ॥
गुं गनरुषर्गं (ग्रं) वदनाङ्गलकारकं। गृहाण सर्वलाकारां
प्रियं नामूलमूरुमं ॥ **द्युगयूकपारं** ॥ उं द्युतनायूनिर्गयागुंस

कत्रत्तसुगर्हितं । लायामुद्राशनीनः । गृध्रगर्गान्नदायक ॥ ७०० ॥
रुलपुष्पगर्वूलधूयदीयरुलने वशादिसंकल्पसिद्धिबन्धु ॥ ॥
धनधनकावथ (धनवान्) ॥ ॥ नसचाशनकावभाउ हूयाव अ
र्घ्याय ॥ ॥ गिरिसुडुडुलखरुटभू अवनगयावस्वानग अ
र्घ्यस (मयन) ॥ गनार्घ्यदद्यात् ॥ ॐ अग्रवावा रुकल्प ॥ ॐ अग्र्यादि
॥ ॐ अगस्त्याग किमर्थक गृहाण मूनिर्यंगव । गिरिवाम्बुस दिगीदीर्ग

पुष्पदूर्वायवाकर्त ॥ रुलचन्दनगन्धार्घ्यं दत्तुमिच्छुजानूना
। यत्रादिननयायानि यत्तर्यया किचामया ॥ गस्मेनमस्तुगस्त्या
य लायामुद्रासदायिनः । निवेदयामिचात्मानं त्वंगनिर्ममिसी
यगी ॥ विलयं या निमयायं त्वत्पुमादान्नवान्प्रथमः । उदयतः
लंकाद्वानं अर्घ्यं भयुनिगृध्रगर्ग ॥ विष्णुदक्षिणयादन मधुन
यदियायदा । नत्तवर्णदवमृष लंकावासनमा मुनः ॥ यउमाना

नामगस्यावगतिमिच्छार्थमिदमर्थं गृहाण स्वाहा ॥ **ॐ** आय ४ गीतक
॥ ग्रामलि सिद्धार्थदधितलुलं । गीतनायसमादाय सयुष्यरुल
यन्दनं ॥ जानस्यीधनपीधुला अर्घ्यार्थं निवदयत ॥ **ॐ** आय
वृद्धिय ॥ वृद्धि वृद्धि यस्तु सुखप्रिय ॥ धर्मसक्तान वृद्धिप्रसः
नुतं सकवृद्धय ॥ **ॐ** लयच विधि ॥ ॥ गीतनमस्कारं ॥ तय
हालदवस्ते ॥ **ॐ** मनादूति ॥ यनिष्ठा ॥ ॥ मणुल यद्वत्सना

यककायचनगस्वानन ॥ आय ४ ॥ कारुण्यं ॥ **ॐ** नमोगस्याय ॥
वातायीरुद्धिनायन समुद्र ॥ ग्रामिण ४ युवा । लायामुद्रायनि ४
प्रीमान् आसीतस्मेनमानम ॥ नमस्तुल्यगस्याय वृंरथान्या
यननम ॥ नमस्तुल्यनव्याया सत्रद्यानायननम ॥ नमस्तु विष
नाशय दिगिदद्विगस्यीस्त्रिग ॥ नमस्तुगनाशय ॥ ग्रामनाश
यननम ॥ नमस्तुदलुरुकाय कमणुलधनायच । युगम्यय

नमो दत्त मगस्तु वदत उम ॥ नमस्तु यागवृथाय महानुदा
यत नमः ॥ वागायीरुक्तिनाथन जीर्णततायत नमः ॥ नमस्तु
गगुहं गुच मृष्टु चोट विनागिन । नमस्तु सृष्टिवृथाय स्तिगिवृथा
यत नमः ॥ दयामयाय दत्ताय स्तानवृथायत नमः ॥ सर्वनाग
हर्तृदर्व सर्वयाय हर्तृयर्त ॥ नागाय दुःखदात्रिङ्गी अलम्ब
मलनागर्त । सर्वसंयलितालम्ब ॥ सर्वसोराग्रादायक ॥ धर्मा

र्थकाममादौ च आयुः पूर्णाय नमः ॥ प्रियं । वातावाताध्वर्तदालु
षट्पुत्रवर्तिदायक ॥ नमस्तु यागवृथाय लायामुदायत न
मः ॥ ॥ नमो गस्तु दत्ताय नमस्तु धर्मवृत्ति ॥ नागाय कवि
नागाय अगस्त्याय नमः ॥ चतुर्भूमिर्धुर्वृत्त धुर्वृत्ति
धुर्वृत्त ॥ चतुर्वर्तधुर्वृत्त धुर्वृत्त मन्त्रायक ॥ चतु
र्वृत्त दावगस्तु मूर्तिमन्त्रमूयासर्त । गायत्रीवदमागाव सा

१०। यः पूजाय चाकः लङ्गः ॥ ७५ ॥ तादाय
 कलशम् ॥ केशीनीयम् ७२ ॥ नयम् ७३ ॥
 कोटीखवधा ॥ अक्षतः सा ७४ ॥ क. य. गु
 नः स्तानवा. हा. मु. गि. छो. अक्षतः. आ
 पि. च्छान. धर्म. कृ. स. नि. व. २. म. न. ॥ व. डि
 कोया. ल. प. म. लो. न. क. चो. व. लि. ॥ म
 अ. स. न. व. ल. जा. अ. र्च. मा. न. ७०. लो. न.
 आ. का. ण. माल. का. य. च. न. सि. या. व. या
 वे. थो. भा. ह. नि. क. य. द. ल. त. आ. ध. न
 प्र. का. ह. न. व. ग. सि. ध. न. सि. ध. न. मू. क.
 क. र्क. जा. कं. क. न. ॥ द. स. वा. मा. व. मु. ॥
 छि. या. ऊ. ऊ. म. पू. ॥ क. स. तु. क. या. सो. य. ऊ.
 ऊ. म. पू. ण. का. दू. पू. ॥ हा. क. पू. ॥ लो. न. मा
 नि. ता. लो. न. क. स. मा. द. दा. हा. य. व. द. ट
 सि. या. वू. डी. न. लो. न. छि. या. गु. ल. मा. हि
 या. क्षी. रु. ल. छि. या. अ. क. त. य. न. लो. न. ७
 रु. ले. लो. न. व. व. न. तु. ल. गी. छि. या. धू. न
 छि. या. छू. मा. न. सि. ता. वू. सा. मा. धि. ध. नि
 वो. ॥ आ. ष. धी. म. न. च. पि. पि. नि. डी. न. मू. क.
 म्पा. न. ल. व. क. डि. त. क्षो. ले. रु. न. नि. न्वा
 न. ध. न. वा. य. न. थ. दा. खो. गा. प्री. व. न. जी
 ख. अ. व. क. सि. ध. व. या. म. द. कि. ण. वा
 म्पे. ण. या. म. द. कि. ण. नि. स. वा. व. ध. नि
 गो. ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विगीचस्वयुचि॥ ब्राह्मणाय नमः ॥ मूर्तिमान्ममूयासतः ॥
 वीर्यदुकात्रावषट्कात्रा नमस्कात्रश्च मूर्तिमान् ॥ गृतिः स्मृतिश्च
 नातिष्ठ धर्मशास्त्रं च मूर्तिमान् ॥ कृतिरामं यत्राद्यं सख्यथा
 गयटङ्गली ॥ आयुर्वेदधनं वेदं वेदाग्रधर्ममवच ॥ अथर्ववे
 दान्यवेदश्च मूर्तिमान्ममूयासतः ॥ नगवक्त्रासमादव मृषिः
 सर्वयतिस्त्रिगुणः ॥ नमो नमः देवाय अगस्त्याय नमानमः ॥

Handwritten in green ink:
A large stylized character, possibly 'क' (Ka) or 'ख' (Kha), followed by a vertical line and a large loop.

श्रीमद्भगवद्गीता	
1.832	I

MS. No. 175

१ दीनजावरुविद्यान्तं खिचनीकृष्टार्जगथा। सामान्यदाकृकयाजाः (ग्वतोदनंत
वानजा॥ सर्वलिवमयालाकाः ४ सर्वाः ४ किमयाः ४ मियः ४। गर्वा निष्ठागयाताना
निवगध्यापुलीनगा ॥

१ यला ११
१ कासमि २
१ क्षाणीयका ३
१ उद्रम्वन ४
१ ययिली ५
१ निमुलि ६
१ रीनाग ७
१ गमी ८
१ यद्रका ९
१ ज्ञान १०
१ अक्रि ११
१ कनरु १२
१ वर १३
१ नैवमि १४
१ कयिके १५
१ ममि १६
१ ग १७
१ ममि १८
१ नैवमि १९

उत्थंतेला कुर्वं धामम रावण नदीं गहिर्म सावधा त्राहीना हंग
वृवासाने नदी रायद्वर्ण गहिर्मा मोदवद्वातु । नित्यं प्राग्मद्विनागं
अनियत वयूष सुहिर्मा कालयागम् । विन्यालान्यत्कुलार्कवद्र
यगगतागम् सुहिर्मा हान्धकात्रात ॥ ॥ कलशया ॥ मूर्तिस्त्रिदशवता
नीसकलसूत्रनदीतीर्थगंगदिभाये ४ यूष्मन्तलोषधीशि ४ रुल
कसमयूतेश्वरसत्यलवन । विद्यानीधिसहस्र ४ कलूषविषरु

नैसर्वयज्ञयुगम् । गंधर्वकेशमूर्तिं निवसकलमयं मंगलमं
गलानी ॥ ॥ गणेशया ॥ विष्णुश्चरायवीत्राय विष्णुवृषाय नमः ४
सर्वविघ्नहर्तृदर्व सर्वशक्तिनमाश्रुत ॥ ॥ वलिया ॥ नित्यानन्दय
नीशान्क निष्कलकीनिनामय । आमातीगयर्नृन्यै र्हेनर्वर्गनमा
म्यदं ॥ ॥ गणेशया ॥ अमृतमथनात्यन्त सुत्ररिलाकधनिनि
। ॐ दं ग्रसंगृहाण त्वं वर्गभवनमूकमं ॥ ॥ वहिद्विनाशया ॥ ॐ

दधवनमसुखं कूलदधवनमानमः। स्नानदधवनमसुखं यूजंगृह
 नभासुगं ॥ ॥ म॥ ॥ याथाहं यापकमार्हं यायात्मायायसंश्रित
 ॥ गारुमां दधवनं सर्वयापदभारव ॥ अनुगुणं गरीनास्मिन्
 भवतां गरीमम। तस्मात्कायं गरावनं न दधत्वं यत्र भवति ॥ यडा
 मानानामगस्त्यवगतिमिच्छार्थं युगाच्चनविधिः शुभं गन्धयूष्यधूपयदी
 यश्चर्चनविधिः गत्सर्वविधियत्रियूर्लमसु ॥ ॥ दधवनमस्वामी ॥ म

लखि ३

तुलविसर्जनी ॥ मणुलसथादस्नाननक्षुय ॥ दधदक्षिणमयक ॥
 वाक्मणयूजनी ॥ दवाणां दधि ॥ न्यासलिकाय ॥ दवादि विसर्जनी ॥
 दधयकमसु ॥ सूर्यसिद्धिथयकं धानमणुलथयाव ॥ यडा मा
 नासिद्धि ॥ दसकनसिडालगतासतयडमानयादधवन ॥ दधव
 स्यात्वा ॥ वग ॥ दधयदयक ॥ सिद्धि ॥ दध्वं विष्टया ॥ सगुण ॥ दधधि
 काया ॥ भादनी ॥ ॥ सिद्धवमूढकायसुखसतः सतुस्नानकाशवृत्ता

यसिधममूककाय॥**ॐ** श्रीगुरुतल॥ ॥ बल्लादिविसर्जनी॥ गुरुज्यायि
नायस्ककाय॥ बलिधनस॥ (गमयससायाक॥ ईश्वारिखालीखूस
॥ अगस्त्यकलश॥ स्वासकाय॥ धम्मनियनिषागनयाचक अर्घ्यरुल
सहितन॥ निकालनगकरकायाय॥ ॐ ह्यगस्त्यवगविधानसमा
कम्॥ छरुनवधुधर्मल॥ ईश्वारनिवृत्तासदा॥ लखकस्ययनईश्याग
यायना॥ ममहान्महान् ॥ ॥ यागद्वयसनागद्याटकमितमासइसि

तमाद्यक॥ दुर्गया॥ सुति॥ (थोदिनत्रविसृजसोखायदस्यगर्नदी॥ ला
लिथललिगारिधाननगव॥ श्रीश्रीनिवासनृथ॥ सद्यवावलिखन्म
दागलयति॥ श्रीकृत्तयानवृत्तम॥ ॥ ॥ ॥ गुरुममुसर्वउगताम॥ ॥
श्वालमुखविद्यगस्त्य॥ वारिहेलापितस्तवागु॥ नन्दनवृत्तयथा॥ कि॥ यूस
कास्वस्तिकात्रलान् ॥

१७ नमो वैष्णवणेय ॥ शिववडवाच ॥ अग्निनीलकुण्डगुह्यादग्निप्रसङ्ग ॥ यथा
 यदाप्रयुज्यामि शर्वकृत्वा नवडक्तयस्तानि कृत्वा सूर्यादिर्मन्त्रा ॥ कात्रयान्
 । सूरुडादवीम्युजयान् । प्रथमताविण्मन्यासः । उल्लयागुह्युजानाद्यैर्गुह्यै
 । यैवलिः । मालिना ॥ कात्रयान् । हृदयादिना कलर्ग ॥ अगुह्युवंधूययः
 न् । निवर्त्तनकात्रयान् । निर्मन्त्रेनयाय ॥ धान्ययूवणमन्त्रः ॥ नैऋतधुंधनयाय
 मूर्ध्नि मरुधान्याय मूर्ध्नि यतिदयास्वरा ॥ नक्षत्रायागमन्त्रः ॥ उर्वेवैष्णवणेय

विद्महे मरुधान्यायधीमहि । तन्नाधनदयवाद्यान ॥ हृदयादिगुह्ययुग
 मन्त्रेण युक्त्वा ॥ तन्नादीयनका लारुनका रुलस्तानी ॥ मरुलूय ॥ नैऋतधुंधनयाय
 प्रवणेययादुर्कायुजयामि ॥ नैऋतसूरुडादवीमहि तायायादुर्का ॥ यत्रग
 युगमधन ॥ तन्नान्यासः ॥ नैऋतधुंधनयाय मूर्ध्नि रुट् । नैऋतधुंधनयाय हृद
 याय नमः ॥ नैऋतधुंधनयाय निवसस्वरा ॥ नैऋतधुंधनयाय निखाये वोषः
 ट् ॥ नैऋतधुंधनयाय कवचाय दू ॥ नैऋतधुंधनयाय नरुगयाय वषट् ॥
 नैऋतधुंधनयाय मूर्ध्नि रुट् ॥ कर्नागन्यासः । अर्घ्यागमहृदयादिनय

जा॥ आत्मयुजा॥ ध्यान॥ नै॥ योगवर्णचतुर्विंशतिं चान्वयिगललाचनं। मूकटं कः
 तुल्यं चैव सर्वगिरिगिरिं॥ उदीचीव सधायी च कवचाकारं गिरिं॥ मुखं दं
 क्षाद्यथायनं॥ मसुखविहसिर्ग॥ गदागकिधनं दवं ददहसुदयनं॥ वामपृ
 ष्ठगताधृत्वा एकहसुसुवर्णधृत्॥ वामात्मगता रात्र्या सूरुडाद्विभुता गुरु॥
 वत्तयागुदयागस्या॥ कादवस्यपृष्ठग॥ सिंहासनस्थावनया धनधान्यार्थ
 दायक॥ उरिलानामय नन्द॥ योगवर्णसमष्टुति॥ गयचामीकवाँसा मलिन
 द॥ यकीर्तिग॥ नीलवर्ण॥ यूर्णरुडा नकावर्णनिकुल॥ कलिमालीसमा
 रा२

ख्याता मवर्णगववानन॥ श्लोकचामीकवाँसा सलन्द॥ समुदाहग॥ म
 खन्द॥ योगवर्णकं च नूतक॥ गवकावन॥ सर्ववितसुसंयूर्ण॥ सर्वकामरुलय
 द॥ ॥ ततादात्रयुजा॥ नै॥ धुंधनदाययादुकी॥ नै॥ मुँमहाधाययादुकी
 ॥ दद्वि॥ नै॥ धुँगीयदाययादुकी॥ नै॥ मुँमहायदाययादुकी॥
 उरुव॥ नै॥ मुँगीनखमूँययादुकी॥ नै॥ मुँमहायदाययादुकी॥ यप्रि
 म॥ नै॥ धुँगीयूर्णययादुकी॥ नै॥ मुँसूयूर्णययादुकी॥ म॥ ध॥ नै॥ आधान
 गकादिकर्णिकाययर्क॥ नै॥ धर्मादिजने धर्यययर्क॥ नै॥ ग॥ कल्यटकासा

यसिंहासनाययादुकां॥ॐ॥ननासनाययादुकां॥ॐ॥वैवेद्यवज्राययादुकां
॥ॐ॥सुग्रीसरुद्रादवीसहिनाययादुकां॥ॐ॥आवाहनादिचेन्दनादुकांसिद्धय
ज्ञायवीमालायुष्य॥॥ॐ॥वैअलिमायवोयादुकां॥ॐ॥वैलघिमायवोयादु
कां॥ॐ॥वैपायथयवोयादुकां॥ॐ॥वैपाकामयवोयादुकां॥ॐ॥वैमः
हिमायवोयादुकां॥ॐ॥वैल्लिमायवोयादुकां॥ॐ॥वैवलिमायवोयादुकां
॥ॐ॥वैकामावलिमायवोयादुकां॥॥युष्मादि॥चामयवधायवोयादुकां॥
वैद्वान॥ॐ॥इ॥अ॥रुद्राययादुकां॥ॐ॥वैवसुधायवोयादुकां॥ॐ॥

दक्षि ॥ १ ॥ नैमै मलिनदाययाइकां ॥ १ ॥ नैमै सनन्दाययाइकां ॥ १ ॥
 घञ्चिम ॥ १ ॥ नैमै यैरुन्मरदाययाइकां ॥ १ ॥ नैमै नैरदाययाइकां ॥ १ ॥
 उल्लन ॥ १ ॥ नैमै वैविकुल्लाययाइकां ॥ १ ॥ नैमै नैगुफाययाइकां ॥ १ ॥
 आल्लय ॥ १ ॥ नैमै कल्लिमालिनीयाइकां ॥ १ ॥ नैमै नैसुगुफाययाइकां ॥ १ ॥
 नैमै ॥ १ ॥ नैमै नैचल्लन्दाययाइकां ॥ १ ॥ नैमै नैचल्लन्दचकाययाइकां ॥ १ ॥
 वायय ॥ १ ॥ नैमै नैमैरुन्मरदाययाइकां ॥ १ ॥ नैमै नैमैरुन्मरदाययाइकां ॥ १ ॥
 नैमै ॥ १ ॥ नैमै नैमैरुन्मरदाययाइकां ॥ १ ॥ नैमै नैमैरुन्मरदाययाइकां ॥ १ ॥

म॥ नवात्मामनुगच्छ॥ ॐ ॥ वैवेद्यममृतं यथाद्रुकां ॥ ॐ ॥ मूर्ध्नि सूरुदायवी
सहिताय याद्रुकां ॥ आवाहनादि ॥ ॐ ॥ मार्गलित्रमासाधियगथ धनदायया
द्रुकां ॥ ॐ ॥ चैष मासाधियगथ विरुग्णाय याद्रुकां ॥ ॐ ॥ माघमासाधियगथ
रुनाजाय याद्रुकां ॥ ॐ ॥ फाल्गुणमासाधियगथ निधियालाय याद्रुकां ॥
ॐ ॥ चैत्रमासाधियगथ वाक्कसनाजाय याद्रुकां ॥ ॐ ॥ वैशाखमासाधियगथ
पिंगलाय याद्रुकां ॥ ॐ ॥ अश्विमासाधियगथ विगतकाय याद्रुकां ॥ ॐ
॥ आषाढमासाधियगथ बृहत्सखाय याद्रुकां ॥ ॐ ॥ श्रावणमासाधियग

थ कृत्वा ययाद्रुकां ॥ ॐ ॥ तादयदमासाधियगथ योलस्य कलनन्दना
ययाद्रुकां ॥ ॐ ॥ अश्विनीमासाधियगथ लोकयालाय याद्रुकां ॥ ॐ ॥ का
तिकमासाधियगथ यद्व्याय याद्रुकां ॥ ॐ ॥ सर्वमासाधियगथ वैश्रवण
यसूरुदासहिताय याद्रुकां ॥ ॐ ॥ बृहदाय याद्रुकां ॥ बृहदादिदशलाक
यालपूजा ॥ ॐ ॥ मिमंशुलपूजनं ॥ ॥ मूलकलशपूजा ॥ सिंहासनादि ॥ वैश्र
वणादि ॥ ॐ ॥ उमृलाय याद्रुकां ॥ मलिरुदाय याद्रुकां ॥ पूर्णाय याद्रुकां
॥ विकृताय याद्रुकां ॥ कलिमालिनीय याद्रुकां ॥ चलन्दाय याद्रुकां ॥

॥ नवकाववाययादुकां ॥ सरुडागकिम किताययादुकां ॥ अलिमादि ॥
 ददयादि ॥ नै ॥ सर्वनिधिर्य ४ यादुकां ॥ सर्वधनर्य ४ यादुकां ॥ सर्वधन्या ४ या
 दुकां ॥ सर्वनलर्य ४ यादुकां ॥ सर्वसुवर्णर्य ४ यादुकां ॥ नउतस्य ४ या
 दुकां ॥ विद्युद् ४ यादुकां ॥ मुकावत्तर्य ४ यादुकां ॥ सर्वधुं ४ यादु
 कां ॥ सर्वनसस्य ४ यादुकां ॥ सर्ववहिर्य ४ यादुकां ॥ अलकायरी
 र्य ४ यादुकां ॥ अलकाधियगिर्य ४ यादुकां ॥ त्रैगुवधर्य ४ यादुकां ॥
 ॥ त्रैगुवधाधियगिर्य ४ यादुकां ॥ यूक्तर्य ४ यादुकां ॥ यूक्तराधि

यगिह्यः यादुर्काऽ॥ यक्षस्यः यादुर्काऽ॥ यद्राशिवाधियगिह्यः यादुर्काऽ॥
 ॥ यक्षस्यः यादुर्काऽ॥ यक्षणीस्यः यादुर्काऽ॥ नागस्यः यादुर्काऽ॥
 नागसीस्यः यादुर्काऽ॥ किन्नरस्यः यादुर्काऽ॥ किन्नरीस्यः यादुर्काऽ॥ वैष्ण०
 वल्लभस्यः सरुदाससिगाययादुर्काऽ॥ चन्द्रनादि ॥ गगादवीयूजनं ॥ ॥ ॥ ॥
 ध्यादि सरुदायधौ यादुर्काऽ॥ वसुधनायधौ यादुर्काऽ॥ सरुदायधौ
 यादुर्काऽ॥ रुदायधौ यादुर्काऽ॥ रुकायधौ यादुर्काऽ॥ सरुकायधौ या
 दुर्काऽ॥ चन्द्राकायधौ यादुर्काऽ॥ सनत्त्वगीयधौ यादुर्काऽ॥ नमः

द्वेष्टयाद्रकांति॥ ॐ ॐ वेष्टवत्तयसूखरुदाद्वेष्टयाद्रकांति॥ अङ्गमः
याद्रकांति॥ चतययाद्रकांति॥ यतिनययाद्रकांति॥ अनङ्गतामागुयाद्र
कांति॥ वसन्तद्वानयालाययाद्रकांति॥ रुलायेयाद्रकांति॥ लीलायेया
द्रकांति॥ कीर्तयेयाद्रकांति॥ लंढायाययाद्रकांति॥ नन्दायेयाद्रकांति॥ र
दायेयाद्रकांति॥ ऊयायेयाद्रकांति॥ विकायेयाद्रकांति॥ धूर्त्तयेयाद्र
कांति॥ सर्वकृद्वधविनायाद्रकांति॥ सर्वदाविदनिर्लङ्घयेयाद्रकांति॥

सर्वसंयत्तिदायिभयाद्रकांति॥ ॐ ॐ सूखरुदाद्वेष्टयाद्रकांति॥ चन्दनादियुष्म
॥ ॥ कलगायुजर्न॥ आधवागक्कादिगणगुनसर्वगार्थसमूहमृत्युञ्जय
सयनिवायवृद्धलायाद्रकांति॥ विष्णुवन्नुदायसदानिवायवृद्धिमायवे
ष्टवत्तययाद्रकांति॥ ॐ ॐ योलस्त्याययाद्रकांति॥ वणिष्टायरुवदाजायआण
यायरुगवविष्णुमिगायककुल्लायअम्बस्वामादिबुद्ध्यादिनवग्रहादि
युक्तियदादिनन्दगयागनाजिसंयुक्तकलामयनमः॥ ॥ कलकुराव
न॥ आधवादिगिरिवृक्षार्चन॥ अथावास्तु॥ ॥ वलिष्टुजर्न॥ ॐ ॐ द्वां द्वां द्वां द्वां

दधुयालिङ्गगुयाला ४ यमहारे नवायवर्लिगृङ्ग २ सर्वधनधान्यालारं
दहि ददाययस्वाहा ॥ १ ॥ वैजं कौं कुं दं ऊलावनन्दगुयालायमहारे नवा
यवर्लिगृङ्ग २ सर्वविघ्नागय २ सर्वधनधान्यादहि ददाययस्वाहा ॥ २ ॥
वैजं कौं कुं दं ३ थलावनन्दगुयालायमहारे नवायवर्लिगृङ्ग २ सर्ववि
घ्नागय २ सर्वधनधान्यादहि ददाययस्वाहा ॥ ३ ॥ वैजं कौं कुं दं ३ लि
सम्बन्धगुयालायमहारे नवायवर्लिगृङ्ग २ सर्वविघ्नागय २ सर्वधन
धान्यादहि ददाययस्वाहा ॥ ४ ॥ वैजं कौं कुं दं ३ अद्यानामुक्तगुया

लायमहारे नवायवर्लिगृङ्ग २ सर्वविघ्नागय २ सर्वधनधान्यादहि द
दाययस्वाहा ॥ ५ ॥ वैजं (प्रकामनूयवलादवीरुयानकङ्गुयालाय
वर्लिगृङ्ग २ स्वाहा ॥ १ ॥ वैजं शुभ्रकनदीयदनुनादवीप्रिप्रुतिधनङ्गु
यालायवर्लिगृङ्ग २ स्वाहा ॥ २ ॥ वैजं (प्रसूवर्णदीयसूयकार्णदवीदधुना
थङ्गुयालायवर्लिगृङ्ग २ स्वाहा ॥ ३ ॥ वैजं खासिह्नदीयकूवनादवी
महायागिनीङ्गुयालायवर्लिगृङ्ग २ स्वाहा ॥ ४ ॥ वैजं नन्द २ महानक
वद्रुनकायनमः ॥ १ ॥ वैजं वैश्रवणरुद्रानकाय अवतन २ स्वाहा

॥२॥ ऐं ॐ जनयदाय अवगव २ स्वाहा ॥३॥ ऐं ॐ धनदाय अवगव २ः
स्वाहा ॥४॥ ऐं ॐ धानदाय अवगव २ स्वाहा ॥५॥ ऐं ॐ सुवर्णदाय
अवगव २ स्वाहा ॥६॥ ऐं ॐ रुतदाय अवगव २ स्वाहा ॥७॥ ऐं वत्ससमुद्र
वर्तुं किमईस ४ नमः ॥ ऐं वत्सवृं किमईस ४२ ॥ ऐं वत्सवृं किमईस ४२ ॥ ऐं
वृं सुवर्णवृं किमईस थाषट् ॥ सुवत्सलधनाय नमः ॥ वैश्रवणधिया
य नमः ॥ ॥ मूलवलिपूजनं ॥ क्रमान् गणयति । वक्राणां दि । नवचण्डा

। अष्टौ नवयूजयन् ॥ ऐं ॐ ऊं ऊं ऊं ऊं यथावाय अवगव २ कुरुयालमः
हावलपना क्रमाय जटारानरासून विनगुहालामुखाय ॐ मीर्गधय
यधूयदीयवलिपूजां नववृषाय पुनिगृह्ण २ कुरु २ मुरु २ रुद्रय २
रुन २ खल २ मरुतामना धियतय ई ३ रुद्र स्वाहा ॥ ऐं ऊं कुरुयाला
यमहावलपना क्रमाय अवगव २ गधयधूयदीने वद्यमत्समीर्ग
गृह्ण २ ई ३ स्वाहा ॥ ऐं ऊं रुद्रकादवाय दण्डपालिमहा नववाय अवग

व२ गंधयुष्यधूयदीयनेवद्यमत्स्यमीसस हिगायगृह्ण २ रुट २ द्रै ३ स्वा
 हा ॥ ॥ गलयति यूजा ॥ ॥ ग्रास यूजा ॥ ॥ कुमावी यूजा ॥ ॥ चन्दनमनु ॥
 उँ श्रीखण्डुकास्मीन विलयन ॥ गृहाण विरुध्वनवाउवाउ । सीराग्यः
 वागंगव ~~यद~~ रुजस्तु विजयतां किन्ननवाउदव ॥ ॥ यज्ञायवमनु ॥
 उँ एगानि विरुध्वनलाकयाला मुथादभनरिहगगनुकानि । यज्ञायवी
 गानियविगिगानि मयापुदलानि गृहाणदव ॥ ॥ मालगास्वानमनु ॥
 उँ धनदायकवाउश्च विरुध्वननिधियालक ॥ वाक्साधियति श्रेव

धिंगलान्काविगानक ॥ ॥ नेवद्य ॥ उँ नेवद्यगृह्णगांयव मत्स्यमीसमंमवि
 ती । आहारं सर्वयन्ता ॥ धनधान्यप्रदाहव ॥ वृद्ध ॥ शिव ॥ कृवन्नश्च शील
 ह्य ॥ कलनन्दन ॥ लाकयालध्वन श्रेव यज्ञायवेधवगमथा ॥ गुथादलो
 तनामानि विविगानिमयाविहा । पुदलानिचमाल्यानि पुतिगृह्णधनश्च
 व ॥ ॥ दण्डवद्यदरुनयमनु ॥ उँ यायसंयतिगृह्णैतु मानानंमीसमव
 वाकन्द ॥ कंदलोतानि कीर्तयध्वनसंगथा ॥ वावृणीसलरु श्रेव दण
 दवृणुयीयनु । धनधान्यप्रसादन उर्यदलंमयायरा ॥ ॥ गगाद्य

आयधनयदाय दानिदइश्वारि विनागनाय ॥५॥ नमामुगत्यिगलनग
 धनि ॥६॥ सुखारुग्रीवाय सुवत्तुषि ॥७॥ सरुसुवत्मीवधिकयदायिन
 निष्ककइश्वारिपुचलुवाहव ॥८॥ नमामुक्तुमल्लयकवृषि ॥९॥ गदा
 सिचकाङ्गगकिधनि ॥१०॥ सुवत्तुकाधीवस्युल्लुधनि ॥११॥ समस्तइश्व
 यरुवारिहानि ॥१२॥ सुतनयार्तिगितयदयष्टि गदासिदलुयधः
 गकिधनि ॥१३॥ सुवत्तुकाकियनिर्मस्यदहं नमामिनिह्यमनितदयदहं ॥

१४ ॥ नीलात्यलारकनयस्यदहं विवाडगतगकिवहीनुयाग ॥१५॥ वावृष्यदि
 गुप्तदिग्वृत्तारुद राडासगर्गसगर्गनमामि ॥१६॥ यत्ताडायुष्ट्युक्तिर्मः
 विष्कलुर्त गदायुधानकिधनवत्तु ॥१७॥ गुफागदयदयविदरुदहं
 नमामुगसोधनयदहकिनाय ॥१८॥ दगासद्विगर्गकिगमर्कगारु ॥१९॥
 गुफमालिङ्गिगवानुदह ॥२०॥ क्वायुधनवत्तुधवावत्तु ॥२१॥ सकलिमाली
 धनदानमामु ॥२२॥ नेर्जयदिगागसमाकिगार्ग गदासिदहमाव

नकाचनारु१। चलन्त्यनामानमहं नमामि तच्चन्द्रकान्तद्विधयमूर्ति॥
१३॥ सनस्वगीका नमहं नमामि मूर्धन्ययन्दुगदाध्वजायू१॥ सूर्य
गवर्कदुर्गिनिन्दुतुल्यं समीपलस्कं ववर्धं ववर्धं॥ १४॥ नन्दाचसालि
नितदहंमूर्ति संसकावर्धनलकववार्धं। नमामिति त्यं शवकाण
संक्षिप्तं गिष्मलं क्वायूधवत्तुल्यं॥ १५॥ गान्धात्रयालानसगर्गन
मानि यन्दुलुगयास्यदिसंक्षिप्तं। यनाधकानसिगर्गिगृध्रक संक्षिप्त

शित्याधनधानावृष्टि॥ १६॥ नमामुत्तमै नववारुनाय यन्दुलुगाधय
निधीश्वराय। समानसावायसखयदाय नमामुत्तमै उयमाददाय॥
१७॥ नमामुत्तमै धनाधुन यन्दाधुन नमामुत्तमै। नमामुत्तमै सूत्राधुन ध
नाधुन नमामुत्तमै॥ १८॥ महावाहामहासत्त्व वाजवाजववपुद। मृषि
संधामुत्तमै नित्यं वदामामूलययद॥ १९॥ विंगन्दावियूलग्रीवा द
व॥ नववारुन१। गदाधवविशगर्ग। सूर्यगर्ग१ समयुर॥ २०॥ रा

वसर्वसुखानिह्य विश्वार्णसुथरुवान् । दिवासत्रे सुसंग्राम वरुवायुनिया
नितः ॥ २१ ॥ र गवदानवधानी महावल्लयवाकर्म । लाकानक्षत्रयस
यत्त्वमकायक्यार्थिव ॥ २२ ॥ रुकानुर्कंयीतसततं उल्लाघ्युति
युता । धर्मस्य राजयत्यस्मिन् त्वयि सर्वं पुनि स्मिन् ॥ २३ ॥ नमस्कृतं
रुलाकाय नमस्कृतं लिमालिन । नमस्कृतं रुदाय मुखलाय नमस्तु
त ॥ २४ ॥ नमो वैकुण्ठाकाय नमानलकात्रवायव । नमस्कृतं खिमूला

य यक्षमूलाय नमः ॥ २५ ॥ यूर्णयचनमस्कृतं सुयूर्णय नमस्तुत ।
नर्वस्तुतोसधर्मस्तु उगानचिवविष्टकी ॥ २६ ॥ उदीच्या (धैवववदा महा
त्मा कालवृयिण ॥ २७ ॥ स्मार्णं कृत्वामदायका ॥ पुनिधन्यं चकावयत् ॥ २८ ॥
पूर्वजन्म कर्णाय क्लानाक्लानकर्णमया । विनाशाय तुमथव यार्थजः
भ्रातृवश्चयि ॥ २९ ॥ पुसायं कुरुमथव यूर्णाय विवर्द्धन । लक्ष्मीसोः

राग्यसंयति धनधान्यविवर्धनं ॥ २९ ॥ युतिष्ठागठ आयुर्धर्ममृद्विसिद्धि
 युदायिनं । यद्दलाकयुगमिलं यद्दलाकसमाहितं ॥ ३० ॥ यसाद
 ययुमदव नागलोकविनाशनं । वृद्धलाकसुखं याया स्वर्ग
 लाकमहीयत ॥ ३१ ॥ मधुलसुयुथलनिवसिहयलं ॥ मधुलविसर्ज
 नं ॥ दवदक्षिणतयक ॥ बाभ्रणयूजाया यकनटाव ॥ दवाणीवर्दि
 ॥ न्यासलिकाय ॥ दवविसर्जन ॥ सूर्यसाङ्कीधाय ॥ लखधनथयाव

॥ यजमानातिथकविय ॥ चन्दनादिनतचक ॥ आनीवर्दिविय ॥
 वलिआदिनसुनसकाय ॥ वृत्तिवेष्टवणरुदावकस्यवतविधा
 नसमाय ॥ ॥ गतदवसुवसु ॥ मार्गणीवर्दिसिहक ॥ ४ ॥ किल्लोभामदि
 नसुवर्द वगविधनदस्यगत् ॥ ग्रीगलयतिगमामि ॥ रुत्रियूजायनायण
 ४ ॥ ग्रीग्रीनिवाससुयाल लिलखललिताय ॥ गुरुमसुसुवदाकाली ॥ ॥
 ॥ ॥ १९ ॥ गयानविधि ॥ आद्योगयूजा ॥ गतावाभ्रणयूजा ॥ उग्रयवावाह ॥

राग्यसंयति धनधान्यविवर्धनं ॥ २९ ॥ युतिष्ठागठ आयुर्धर्ममृदिसिद्धि
 युदायिनं । यद्दलाकयुगमिर्त्वं यद्दलाकसमाहितं ॥ ३० ॥ यसा द
 यगुमदव नागलोकविनाशनं । वृद्धलाकसुखं याया स्वर्ग
 लाकमहीयत ॥ ३१ ॥ मधुलसुयुथलिवसिहृषणी ॥ मधुलविसर्ज
 नं ॥ दवदक्षिणतयक ॥ वाक्त्रणयूजाया यकनटाव ॥ दवाणीवृदि
 ॥ न्यासलिकाय ॥ दवविसर्जन ॥ हृद्यसाङ्कीधाय ॥ लखधनथयाव

॥ यजमानातिथकविय ॥ चन्दनादिनतचक ॥ आणीवृदिविय ॥
 वलिआदिनसुनसकाय ॥ वृत्तिवेष्टवणरुदात्रकस्यवृत्ति विधा
 नं समाच्य ॥ १ ॥ गतयवसुवसु ॥ मार्जणीयसिंहक ॥ ४ ॥ तिथ्येभामदि
 नसुवृत्तिवृत्तिधनदस्यत ॥ श्रीगणयतिगमसिंह ॥ रुत्रियूजायनायण
 ४ ॥ श्रीश्रीनिवाससुयाल लिलखललिताय ॥ गुरुमनुसुवृत्ति काली ॥ ॥
 ॥ ११ ॥ गयानविधि ॥ आद्योगयूजा ॥ गतावाक्त्रणयूजा ॥ उग्रयवावाह ॥

ॐ अथादि ॥ यजमानस्यागस्त्यवगाहं ॥ गमश्चाकुरुलकामनया सर्वकित्विष
 मयगमनार्थं ममूक (ममूक) यामूकनामगममिति वाक्मणय ॐ ममूक नूद दे
 वगोपुत्रमहर्षिपुत्रद ॥ ॐ कादाग ॥ स्वर्गदिकि ॐ दद्याग ॥ स्मार्ग ॥ ॐ गव ४
 मवरुथानिर्ग ॥ गव ४ पुष्पयानिर्ग ४ ॥ गव ४ पुष्पयानिर्ग ४ ॥ गव ४ स्वर्ग
 यनीमरुत ॥ १ ॥ यावनीसर्वस्त्रिगानी कुर्वन्निचवदन्निच ॥ देविषामनुपूतन न
 र्ययन्निमेनीचिर्ग ४ ॥ २ ॥ मृषीणममिदपुस्य गवाक्षामपुथाडिग ४ ॥ सर्वेषाम
 वरुगानी गव ४ गव ४ मरुम ॥ ३ ॥ गव ४ स्वर्गस्यमायानं गवाधान्या ४ स

४ अथा

नागना ४ ॥ गवाधर्मस्वयुचि ॥ गव ४ पुष्पयानिर्ग ४ ॥ ४ ॥ गवाध्या ४ लि
 वदवगुष्टासं लाकात्यापुवेष्टववेष्टवयूत्र ॥ यावन्निषामालिरुवन्निगस्या स्म
 वदवर्गलि मूरवचस्व ॥ ॥ अगुर्गंधादि ॥ ॥ निवर्कसादुर्क वाक् ४ ॥ निलज
 लप्रागं गृहीत्वा ॥ ॐ वात्रादकल्प ॥ ॐ अथादि ॥ यजमानस्यागस्त्यवगाहं ॥
 गमश्चाकुरुलकामनया सर्वकित्विषमयगमनार्थं मिमी गमसवदपसि
 वस्मसिदाग्धीनूददेवता ममूक ४ वजायसदा निवायुगुह्यमहर्षिपुत्रद ॥
 ॐ कादाग ॥ दग्दि ॥ स्मार्ग ॥

श्रीपुस्तकमंत्रः। नागयोगी च
 याधरुः। अथ पुस्तकानामास्तु य
 न्॥ १३ ॥ शुक्लाङ्गुलान्तर्गु
 धः। सिरावुस्तु चतुष्कना। आर्य
 कमण्डुलवाणी धनरुस्तान
 मास्तु यग ॥ १४ ॥ द्वाक्कागामा
 कलम्बुधिः। रुविकमलस
 स्त्रिणा॥ स्त्रिणकमण्डुल्यध
 धन्युक्तानामास्तु यग ॥ १५
 ॥ सिद्धिलम्बुध्याधरुः। च
 दराठमन्त्रमक्रुण्। नागयोगी
 स्त्रिणा। इति वक्तुनकीसिना
 नेकगाने॥ यीगान्नीलुड
 खोचण्योपयायोस्त्रिणा। ति
 मो॥ सिरुयद्वक्तिगादवी
 बा॥ उलोगानामास्तु यग ॥ १६
 ॥ कंठविक्कमलस्तु च वक्तु
 द्रीकमण्णिग। एकास्याधि
 उगकना नीलात्यनदले
 द्वाण॥ श्वर्गुधण्णागनीस्तु
 विष्णुलिकमल्लिकुण्। वन

दीदकि। लोडुला वामरुस्तु
 खिवव॥ श्वटर्कदि। लुमिवा
 यी कमण्डुल्यकया लर्क। पु
 स्तकनागयोगी। मरुय
 वस्त्रमण्णिग॥ सद्यलिकान
 मयुक्ता। त्वगीवा द्वाकका
 त्रिणा। सर्वसियक्तिगागसि
 मरुलम्बुनीनेमास्तु यग ॥ १७
 गत्तार्णय॥ त्रिण्यधनेध
 न्यीसर्वसर्ग॥ विद्वर्ककाजने
 कुडी। प्राप्तिपजमीगमिना
 वृत्तिबाण्डालम्बुस्त्रिणा। समोर्क
 ॥ ॥ अयुय॥ १८ ॥ मायुवना २ ॥
 द्वाकस्तु ३ ॥ वादु विष्णुल ४ ॥
 मायुयद्वज ॥ अयुर्गुक्रम ५ ॥
 मायुवना १ ॥ द्वाकस्तु ६ ॥
 वादु कमण्डुल ॥ क्रीकमर्ग
 क्रुण् १० ॥ अयुस्वज ११ ॥ मायु
 विष्णुल १२ ॥ अयुयद्व १३ ॥ वा
 द्वास्तु १४ ॥ द्वाकविना १५ ॥
 नागयोगी १६ ॥ धन १७

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 वासुदेवाय नमः ॥ १ ॥
 वासुदेवाय नमः ॥ २ ॥
 वासुदेवाय नमः ॥ ३ ॥
 वासुदेवाय नमः ॥ ४ ॥
 वासुदेवाय नमः ॥ ५ ॥
 वासुदेवाय नमः ॥ ६ ॥
 वासुदेवाय नमः ॥ ७ ॥
 वासुदेवाय नमः ॥ ८ ॥
 वासुदेवाय नमः ॥ ९ ॥
 वासुदेवाय नमः ॥ १० ॥
 वासुदेवाय नमः ॥ ११ ॥
 वासुदेवाय नमः ॥ १२ ॥
 वासुदेवाय नमः ॥ १३ ॥
 वासुदेवाय नमः ॥ १४ ॥
 वासुदेवाय नमः ॥ १५ ॥
 वासुदेवाय नमः ॥ १६ ॥
 वासुदेवाय नमः ॥ १७ ॥
 वासुदेवाय नमः ॥ १८ ॥
 वासुदेवाय नमः ॥ १९ ॥
 वासुदेवाय नमः ॥ २० ॥

आहुतावतुहस्तं धनं तन्वा
 हिमादिरा ॥ ११ ॥ नैवायं निधुलं
 यत्कयात्तदधर्मं नमः ॥ ११ ॥
 रुविचयस्त्रिणाधना लम्बी
 नकावतुहस्तं ॥ स्तुत्यं कमलं
 लिययं यस्तुलना नमास्तुय
 ॥ १२ ॥ दृष्टाणां विचयस्त्रिणा
 लम्बीसंगानकास्तुयतं ॥ स्तुत्यं
 कमलं तुलना यद्ययं सुध
 नानमः ॥ १३ ॥ श्रीकर्मनागपा
 (धार्ष्ट्यं) निधुलना धर्मकयात्तर्क
 ॥ धर्मे श्रीकर्मवत्पुंसि जयत
 न्वा नैवास्तुयतं ॥ १० ॥ स्वर्ग
 न्वायं च या यद्यं यस्तुलना धर्म
 वत्पुंसा ॥ स्वर्गलम्बीयया धर्म
 सिद्धयद्यस्त्रिणा नमः ॥ ११ ॥ वृ
 क्षिणा ॥ १२ ॥ हिमादिरा पद्य
 स्तुयानमास्तुयतं ॥ दृष्टाणमन
 र्कधर्मे निधुलं विचयत्तर्क ॥
 १२ ॥ रुमवत्पुंसि तुलना ॥ १३ ॥